नेहरू बाल पुस्तकमाला

गिजुभाई का गुलदस्ता-8

बेदम बेदुमा

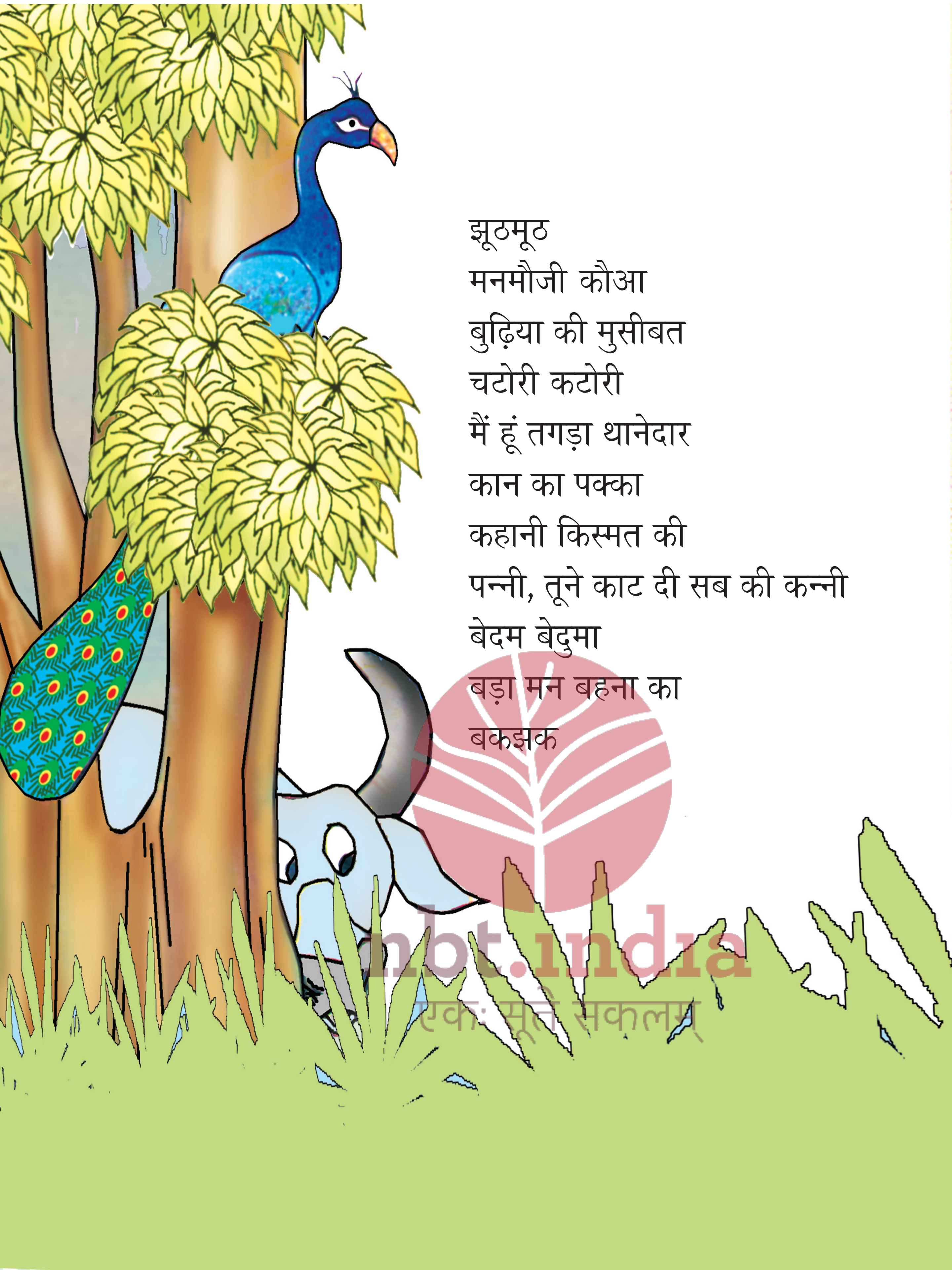
गिजुभाई बधेका

अनुवाद प्रस्तुति और चित्रांकन
आबिद सुरती



nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA



झूठमूठ
मनमौजी कौआ
बुढ़िया की मुसीबत
चटोरी कटोरी
मैं हूं तगड़ा थानेदार
कान का पक्का
कहानी किस्मत की
पन्नी, तूने काट दी सब की कन्नी
बेदम बेदुमा
बड़ा मन बहना का
बकझक

झूठमूठ

एक था झूठा नगर। उसमें रहते थे तीन राजकुमार।
दो पैदा नहीं हुए थे और तीसरा होने वाला नहीं था।
तीनों यात्रा पर निकले। रास्ते में थे आम के तीन पेड़।
दो गायब थे और तीसरा माटी में भी नहीं था।
उसकी छांव में बैठे राजकुमार, खाने को तीन आम।
दो में रस नहीं था और तीसरे में गुठली भी नहीं थी।
राजकुमार आगे बढ़े। रास्ते में तीन नदियां मिलीं।
दो सूखी सपाट थीं और तीसरी में कंकड़ भी नहीं थे।
राजकुमार एक गांव पहुंचे। उसमें थी तीन हवेलियां।
दो की दीवारें धंसी थीं और तीसरी में फर्श भी नहीं था।
उसमें एक चूल्हा था। चूल्हे पर बनाए तीन लड्डू।
दो में चीनी नहीं थी और तीसरा गोल भी नहीं था।
राजकुमारों ने दावत दी, बुलाए तीन पंडित घर।
दो बिना पेट के थे और तीसरे का मुंह भी नहीं था।
बिना मुंह का पंडित तीनों लड्डू खा गया
और बाकी सब देखते रह गए।





मनमौजी कौआ

एक था कौआ। एक रोज वह महल में घुस कर सिंहासन पर बैठ गया। यह देख राजा भड़क उठा। उसने हुक्म दागा, 'सिपाहियो, इस कौए को बांध कर दलदल में डाल दो।' सिपाहियों ने आज्ञा का तुरंत पालन किया, लेकिन कौआ रोने के बजाए गुनगुनाने लगा :

दलदल में फिसलना सीखते हैं जी
हम दलदल में फिसलना सीखते हैं

राजा को यह देख हैरत हुई कि कीचड़ में डालने के बाद भी यह कौआ मजे से गा कैसे सकता है! उसने दूसरा हुक्म दिया, 'इसे कुएं में फेंक दो, ताकि यह डूब मरे।' सिपाहियों ने वैसा ही किया। लेकिन कौआ दुखी होने के बजाए हंसने लगा :

कुएं में तैरना सीखते हैं जी
हम कुएं में तैरना सीखते हैं

राजा ने सोचा, अब इसे और कड़ी सजा देनी पड़ेगी। इस बार कौए को कांटों की झाड़ी में डाला गया, लेकिन इससे कौए के जीवन में कोई फर्क नहीं पड़ा। वह तो वैसे ही सुर में बोला :

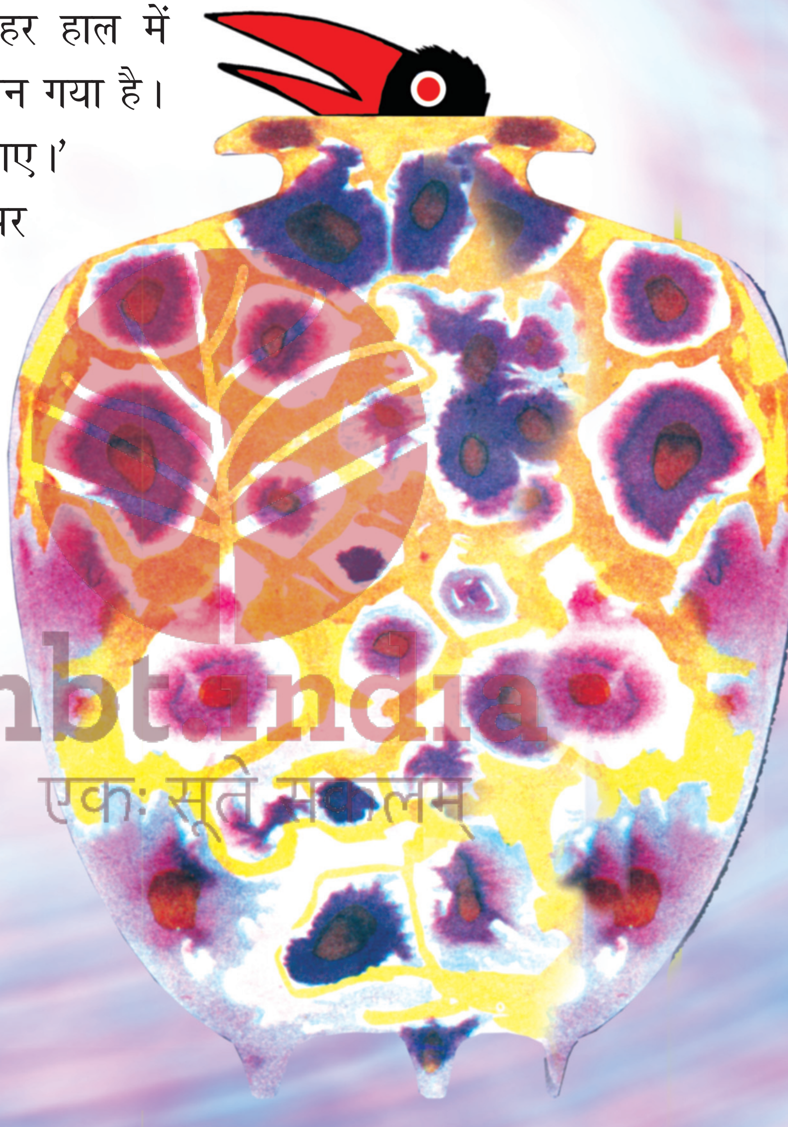
कांटे से कान छिदवाते हैं जी
हम कोमल कान छिदवाते हैं

राजा ने कहा, 'यह कौआ तो बड़ा ढीठ निकला! दुख चाहे कैसा भी हो, यह दुखी होता ही नहीं। अब देखें कि जहां सुख होता है, वहां रखने से इसे पीड़ा होती है या नहीं।' उसने कौए को मुरब्बे के मर्तबान में डलवाया। कौए के तो मानों दिन फिर गए। वह उछल-उछल कर गाने लगा :

चूंचूं का मुरब्बा खाते हैं जी
हम चूंचूं का मुरब्बा खाते हैं

आखिरकार राजा ने अपनी हार मान ली। वह बोला, 'इस कौए को सजा देना नामुमकिन है। इसके लिए न दुख दुख है, न सुख सुख। हर हाल में आनंदित रहने का राज यह जान गया है। इसलिए अब इसे छोड़ दिया जाए।' कौआ उड़ कर करीब के पेड़ पर जा बैठा। फिर बोला :

आजादी का जश्न
मनाते हैं जी
हम आजादी का
जश्न मनाते हैं





बुढ़िया का मुसीबत

एक था बनिया। एक बार उसे कारोबार के सिलसिले में विदेश जाना पड़ा। उसने अपनी घरवाली को बुला कर कहा, 'भानुमती, मैं सिंगापुर जा रहा हूं। बच्चों का खयाल रखना। मेरी मां पर भी बच्चों की तरह ही प्यार बरसाना। जो कुछ बच्चों के लिए करो, वह मांजी के लिए भी करना। उनसे काम करवाया तो तेरी खैर नहीं।'

भानुमती बोली, 'जैसा आपका आदेश है, वैसा ही करूंगी। आप निश्िंचत हो कर जाइए।' बनिया तो हवाई जहाज में बैठ चला गया। भानुमती ने दूसरे ही रोज बुढ़िया से कहा, 'मांजी, आपके बेटे मुझसे कह गए हैं कि जो कुछ बच्चों के लिए करूं, वह आपके लिए भी करूं। कोई काम आपसे न लूं। इसलिए आप इन बच्चों के साथ खेलिए और मौज कीजिए।'

बुढ़िया सोच में पड़ गई। फिर बोली, 'ठीक है। अबसे मैं वैसा ही करूंगी।' बच्चे आंख-मिचौली खेलने जा रहे थे। उनके साथ वह भी चली गई। थोड़े दिनों के बाद भानुमती ने बेटी के कान छिदवाए। तब उसे अपने पति की सीख फिर से याद आई। जो कुछ बच्चों के लिए करो, वह मां के लिए भी करना। उसने तुरंत बुढ़िया से कहा, 'चलिए मांजी, आपके कान छिदवाने हैं।'

बुढ़िया घबरा गई। बोली, 'बहू, मुझे कान नहीं छिदवाने। क्या इस उम्र में कोई औरत कान छिदवाती होगी?' बहू बोली, 'नहीं मांजी, कान तो

छिदवाने ही पड़ेंगे। आपके बेटे का आदेश जो है। मैं आप में और बच्चों में कोई भेवभाव नहीं रख सकती। मेरे लिए तो सभी बराबर हैं। जैसी यह पिंकी है, वैसी ही आप हैं।'

बुढ़िया समझ गई, अब कोई उपाय नहीं है। उसने सुनार के पास बैठ कर अपने कान छिदवाए। उनमें सुनार ने धागा डाल दिया। भानुमती रोजाना पिंकी के कान में तेल लगाती, वैसे ही बुढ़िया के कान में भी लगाती। थोड़े दिनों बाद कान ठीक हो गए, तो वह दो छल्ले ले आई। एक बेटी के लिए



और दूसरा बुढ़िया के लिए। बुढ़िया बोली, 'बहू, मुझे छल्ला नहीं पहनना। क्या बुढ़ियाएं ऐसे फैशन वाले छल्ले कहीं पहनती होंगी?' भानुमती बोली, 'मांजी, आपके बेटे का आदेश भला मैं कैसे ठुकरा सकती हूं?' उसने बुढ़िया के कानों में जबरन छल्ले डाल दिए।

थोड़े दिनों बाद मुन्ने को पाठशाला में भरती करवाने का अवसर आया। शुभ दिन देख कर भानुमती ने बेटे का सिर मुंडवा कर चोटी रखवाई। तभी उसे बुढ़िया भी याद आई। तब बुढ़िया बच्चों के साथ कबड्डी खेल रही थी। उसे वहां से बुलवा कर भानुमती ने कहा, 'मांजी, आइए, नाई के पास बैठिए। चंकी की तरह मुझे आपके सिर पर भी सुंदर सी चोटी रखवानी है। मेरे लिए तो आप सभी बराबर हैं। आपके बेटे का आदेश भी तो यही है। जल्दी कीजिए।' बुढ़िया ने उसे बहुत समझाया, लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। आखिर बुढ़िया को भी चंकी की तरह सिर मुंडवा कर चोटी रखवानी पड़ी। अब 'चोटी-रखाई' रस्म आगे बढ़ी। भानुमती ने दोनों के गंजे सिरों पर सिंदूर से डिजाइन बनाई, दोनों को दूध से नहलाया और रबड़ी भी खिलाई।

भानुमती रोजाना बुढ़िया के सिर में तेल डालती, चोटी बनाती और माथे पर ओढ़नी डाल कर उसे नन्हें-नन्हें बच्चों के साथ खेलने के लिए भेजती। जब भोजन का समय होता, तो वह पुकराती :

है कान में छल्ला चोटी पे पल्ला
बच्चों में जैसे खड़ा हो बल्ला
भोजन है तैयार कर दो हल्ला



यह सिलसिला रोज चलता रहा। साल गुजर गया। बुढ़िया का बेटा सिंगापुर से लौट आया। आते ही उसने घरवाली से पूछा, 'मांजी कहां हैं? मुझे मांजी के चरण छूने हैं।' भानुमती ने कहा, 'मांजी तो गुल्ली-डंडा खेलने गई हैं। आती ही होंगी।'

बेटा चौंका, 'क्या कहा? मांजी गुल्ली-डंडा खेलने गई हैं? गुल्ली-डंडा तो बच्चे खेलते हैं। कहीं बूढ़ी मांए खेलने जाती होंगी?'

भानुमती ने बताया 'मैं तो मांजी को रोजाना भेजती रही। आपने जो कहा था...मांजी पर बच्चों की तरह ही प्यार बरसाना। जो कुछ बच्चों के लिए करो वह मांजी के लिए करना। मैंने पिंकी के कान छिदवाए तो मांजी के भी कान छिदवाए, पिंकी के लिए सोने का छल्ला बनवाया तो मांजी के लिए भी बनवाया। फिर चंकी का मुंडन करवाया, तो उनका भी मुंडन करवा कर उनको बढ़िया-सी चोटी रखवा दी। बच्चों में और मांजी में मैंने जरा भी भेदभाव नहीं रखा।' बनिया समझ गया, उसकी घरवाली साठ से पहले ही सठिया गई है। उसकी अकल पर परदा पड़ गया है। तभी भानुमती ने आवाज लगाई :

है कान में छल्ला चोटी पे पल्ला
बच्चों में जैसे खड़ा हो बल्ला
भोजन है तैयार कर दो हल्ला

गली में खेल रहे बच्चों के साथ बुढ़िया भी दौड़ आई। उसने आंगन में खड़े बेटे को देखा। बेटे ने उसे देखा। दोनों की आंखें छलछला आईं। भानुमती की मूर्खता के कारण बेटे ने मां से क्षमा मांगी। वह और कर भी क्या सकता था!



चटोरी कटोरी

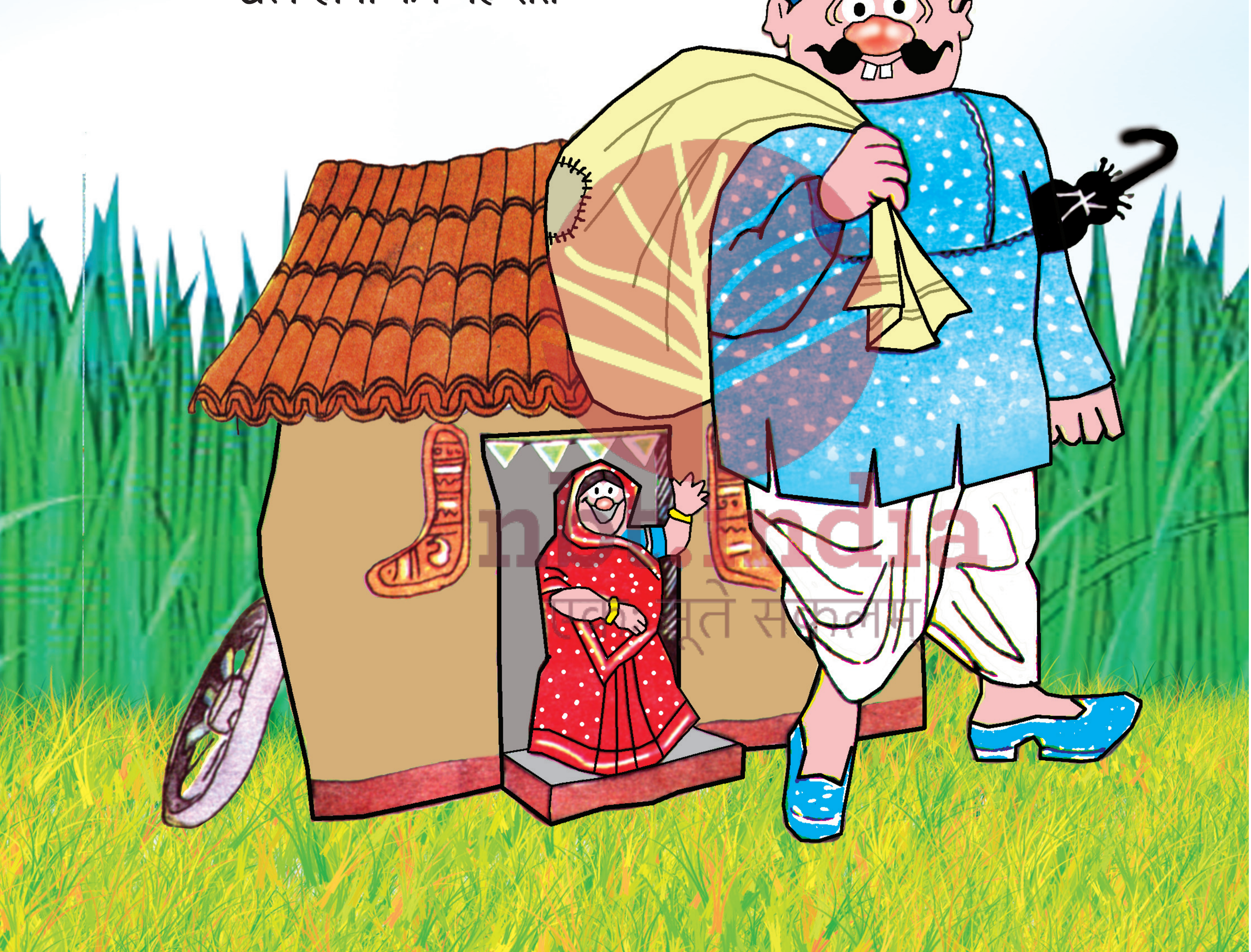
एक थे सेठजी। वह जाने-माने कंजूस थे। उनकी एक सेठानी थी। नाम था कटोरीदेवी। वह चटोरी थी और कटोरी भर-भर खाना खाती थी। वैसे जब सेठजी घर में रहते तो वह संयम बरतती। लेकिन जैसे ही सेठजी बाहर जाते, वह बढ़िया पकवान बना कर भरपेट उड़ाती। एक रोज सेठजी को शंका हुई। सोचा...हम इतना सारा सौदा-सुल्फ घर लाते हैं, वह इतनी जल्दी कैसे खत्म हो जाता है? कहीं सेठानी तो नहीं खा जाती? दूसरे रोज उन्होंने कहा, 'सुनो, हमें झुमरी तलैया जाना है। टिफिन बना दो।' यह सुन कर सेठानी खुश हो गई। फटाफट टिफिन बना कर पति के हाथ में थमाया और उन्हें विदा किया। वह दिन सेठजी ने अपने मित्र के घर में गुजारा। शाम को जब सेठानी मंदिर गई तो वह चुपचाप घर में घुसे और एक बड़े पीपे में छिप कर बैठ गए। रात हुई। सेठानी की खुशी का ठिकाना नहीं था। उसने सोचा...अच्छा ही हुआ, जो वह कारोबार के सिलसिले में यात्रा पर चले गए। अब मैं हफ्ते भर तक मलाई-मस्का, लड्डू-पेड़े, पुलाव-कोरमा खाती रहूंगी। यही सोचते-सोचते वह ब्यालू करके सो गई। घर में रमोला नाम की एक नौकरानी थी। वह भी सो गई। अभी घंटा भर भी नहीं बीता था कि सेठानी जाग उठी। तुरंत उसने नौकरानी को जगा कर पूछा :

बता रमोला एक बात
खत्म होगी कब यह रात

नौकरानी एक लंबी जमुहाई लेते हुए बोली, ‘अभी तो रात का दूसरा पहर चल रहा है, सेठानी।’ सेठानी ने कहा, ‘तब मेरे पेट में बिल्लियां क्यों बोल रही हैं? ऐसा कर, फ्रिज में से मलाई-मस्का ले आ। ब्रेड के साथ खा लूंगी।’ पीपे में छिपे हुए सेठजी बड़बड़ाए–यह बीवी है या बला? मलाई-मस्का ऐसे खा रही है, जैसे कभी देखा ही न हो!

सेठानी ने कटोरा चाट कर साफ किया, फिर अपनी उंगलियां चाटीं और सो गई। लेकिन थोड़ी देर के लिए ही। नौकरानी की अभी आंख लगी ही थी कि सेठानी ने उसे जगा दिया :

बता रमोला एक बात
खत्म होगी कब यह रात



नौकरानी ने आंखें मलते हुए कहा, 'अभी तो रात का तीसरा पहर शुरू हुआ है, सेठानी।' सेठानी बोली, 'तब मेरे पेट में कुत्ते क्यों भौंक रहे हैं? ऐसा कर, चोखे घी का डब्बा उंडेल कर गाजर का हलवा बना दे। बहुत दिनों से नहीं खाया है।' नौकरानी जुट गई। थोड़ी देर में कटोरा-भर हलवा तैयार हो गया। देखते ही देखते सेठानी सारा हलवा चट कर गई। सेठजी ने दांतों तले उंगली दबा ली। फिर फुसफुसाए–इस औरत का पेट तो पिटारा है, खाती ही चली जा रही है।

कटोरा खत्म कर सेठानी सो गई। नौकरानी ने भी आंखें मूंद लीं। वह काफी थकी हुई थी। तुरंत उसकी नाक बजने लगी। तभी उसके कानों से आवाज टकराई :

बता रमोला एक बात
खत्म होगी कब यह रात

नौकरानी ने सिर पीटते हुए कहा, 'रात का आखिरी पहर चल रहा है, सेठानी। थोड़ा सब्र करो।' सेठानी बोली, 'सब्र कैसे करूं! मेरे पेट में शेर दहाड़ रहे हैं। तू एक काम कर, थोड़ा नौरत्न पुलाव बना डाल। साथ में दो गिलास लस्सी भी होनी चाहिए। हां...!' बेचारी नौकरानी ने बादाम, पिस्ते, काजू, किसमिस डाल कर फटाफट पुलाव बनाया। सेठानी ने चटखारे लेते हुए खाया। अंत में वह अपनी उंगलियां चाटते हुए सो गई।

उस पर लानतें बरसाती हुई नौकरानी भी सो गई। सुबह हुई सेठानी की आंखें खुलीं तो उसने क्या देखा कि सेठजी अखबार पढ़ते हुए सोफे पर बैठे हैं। वह हड़बड़ा कर उठ बैठी। फिर दर्जन-भर डकारें ले कर पूछा, 'आप तो हफ्ते भर के लिए गए थे। एक ही रात में कैसे लौट आए?' सेठजी ने बताया, 'शगुन अच्छा नहीं हुआ। बिल्ली ने रास्ता काटा।' सेठानी ने फिर

सवाल किया, 'वह बिल्ली काली तो नहीं थी न?' सेठजी बोले, 'नूडल्स जैसी सफेद थी।' यह सुन कर वह घबरा गई। उसे लगा शायद सेठजी को राज का पता चल गया है। उन्हें कुरेदने के लिए सेठानी ने झिझकते हुए फिर पूछा, 'उस बिल्ली के रोएं कैसे थे?' सेठजी ने बताया, 'मलाई-मस्के जैसी चिकनी।' सेठानी ने अगला सवाल किया, 'उसकी आंखों का रंग कैसा था?' सेठजी बोले, गाजर के हलवे जैसा।' अब सेठानी ने अंतिम सवाल उछाला, 'उसका पेट कितना बड़ा था?' सेठजी ने तुरंत जवाब दिया, 'तीन प्लेट नौरत्न पुलाव समा जाए, इतना।'

सेठानी का शक अब यकीन में बदल गया। उसने तुरंत क्षमा मांगी। उस रोज सेठजी को भी अपनी भूल का एहसास हुआ। उन्होंने अपनी कंजूसी छोड़ दी। नतीजतन सेठानी की चोरी-छिपे खाने की आदत छूट गई।





मैं हूं तगड़ा थानेदार

बीस बनिये थे। वे तीर्थ यात्रा पर बस में जा रहे थे। रास्ते में एक जंगल था। बस जैसे ही बीच जंगल में पहुंची कि रास्ता रोके खड़े डाकू नजर आए। बनियों की तो जैसे जान निकल गई। बस धीरे-धीरे रुक गई। डाकुओं ने सबको नीचे उतार कर धमकी दी, 'फटाफट जेवर और नकदी रख दो, वरना भून डाले जाओगे।' बनिये थे सयाने। डाकुओं से मुकाबला करना मुमकिन नहीं था। उन्होंने तुरंत अपने-अपने बटवे, सोने की अंगूठियां, चेन तथा घड़ियां उतार कर रख दीं। डाकुओं को तो मानों छप्पर फाड़ कर खजाना मिल गया। उन्होंने सब कुछ समेट कर गठरी बनाई और चलने लगे। बनिए मन-ही-मन सोचने लगे...छी-छी-छी, हमारी तो नाक कट गई। हमें चूल्लू-भर पानी में डूब मरना चाहिए या कुछ करके दिखाना चाहिए। तुरंत एक तरकीब सोची गई और सारे बनिए 'रुको...रुको' चिल्लाते हुए डाकुओं के पीछे दौड़े। डाकू रुक गए तो एक बनिए ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की, 'सज्जनो, हमारी एक छोटी-सी बात सुनते जाओ।' एक डाकू बोला, 'सयाना बनता है! हमें फुसलाना चाहता है! हम भोले नहीं हैं कि तेरी बातों में आ जाएं। तू बनिया है तो हम तेरे बाप हैं।' बनिया गिड़गिड़ाया, 'आप हमारे बाप भी हैं और दादा भी। सच यह है कि हम तो क्या, कोई भी आपको उल्लू नहीं बना सकता।' दूसरे डाकू ने अपने साथी से कहा, 'जरा सुन लेने में क्या हर्ज है!' बनिये ने मौका हथियाते हुए कहा, 'हमने

नाटक प्रतियोगिता के लिए एक नौटंकी तैयार की है। आप लोग पारखी हैं, इसलिए हम चाहते हैं कि पहले आप उसे देखें और अपनी राय दें।'

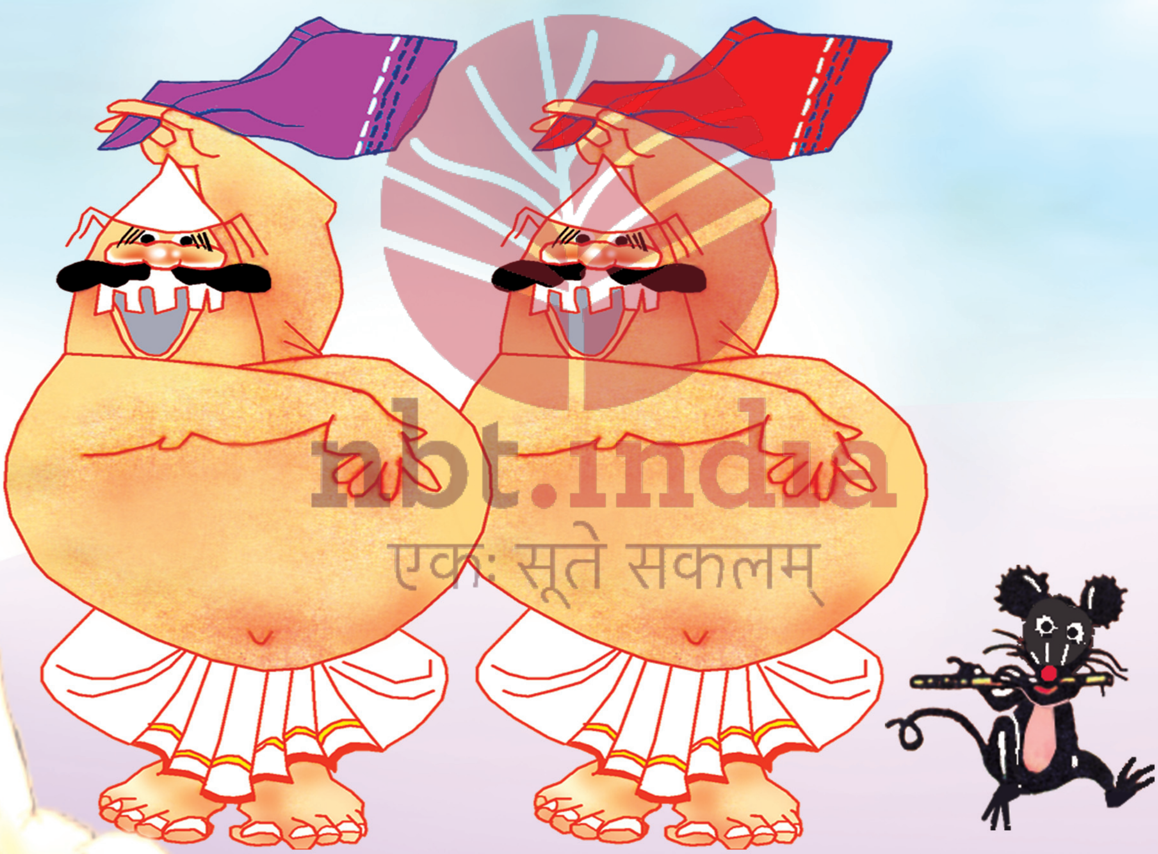
तीसरा डाकू बोला, 'सावधान, मुझे तो इसमें कोई चाल नजर आती है। जब बनिया चाल चलता है तो बड़े-बड़े सिकंदर मुंह की खाते हैं।' बनिये ने कहा, 'वे दिन तो कब के लद गए। हम तो सीधे-सादे कलाकार हैं। आप लोग अपना थोड़ा कीमती समय हमें देंगे तो कृपा होगी। यह प्रार्थना है, कोई हुक्म नहीं।'

चौथा डाकू बमका, 'अरे, तू किसे झांसा दे रहा है? नौटंकी भांडों



का पेशा है, बनियों का नहीं।' बनिया बोला, 'अब जमाना बदल गया है। आजकल बनिये भी अभिनय करते हैं और ब्राह्मण भी। बड़ा पैसा है इस धंधे में। चाहें तो आप लोग भी स्टार बन कर करोड़ों कमा सकते हैं।'

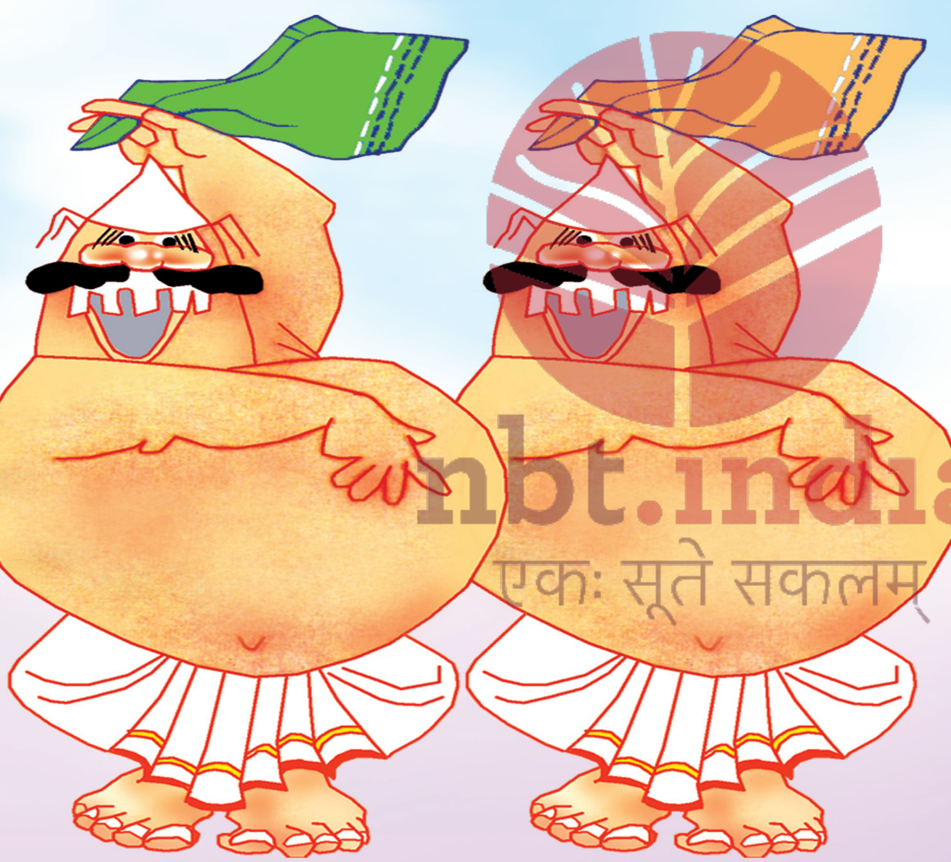
डाकुओं के मन ललचा गए। एक ने कहा, 'थोड़ी देर नौटंकी देखने से आकाश नहीं टूट पड़ेगा। और फिर, यह मत भूलो कि हमारे पास बंदूकें हैं, जब कि ये कुंजड़े निहत्थे हैं। इनसे डर कैसा!' सारे डाकू एक पेड़ की छांव में नौटंकी देखने बैठ गए। अब बनियों ने अपना कमाल दिखाना शुरू किया। पहले एक बनिया आगे आया और वकील की अदा से बोलने लगा :



मैं हूं बैरिस्टर
ठप हो गया धंधा तो बन गया कनस्तर
मैं हूं बैरिस्टर

एक डाकू दूसरे से बोला, 'वाह रे वाह, यह तो बढ़िया एक्टर है।' फिर दूसरा बनिया आगे आया और गला खंखर कर बोला :

मैं हूं हीरो नंबर वन
पिट गई फिल्म बन गया जीरो नंबर वन
मैं हूं हीरो नंबर वन



दूसरा डाकू तीसरे से कहने लगा, 'ये बनिये तो पैदाइशी भांड लगते हैं।' फिर बनियों की ओर मुड़ कर फरमाइश की, 'अब कोई ऐसा किरदार पेश करो कि तबियत फड़क उठे।' तीसरा बनिया तैयार ही था। वह आगे आ कर नाचने लगा :

मैं हूं तगड़ा थानेदार
कल हो गया डिसमिस, आज रोता हूं जार-जार
मैं हूं तगड़ा थानेदार

थानेदार बने बनिये को बुक्का फाड़ कर रोता-गाता देख सारे डाकू ठहाके लगाने लगे। वह बनिया धीरे-धीरे खिसकने लगा। खिसकते-खिसकते वह थाने पहुंच गया। असली थानेदार को सारा किस्सा सुनाया। असली थानेदार तुरंत सिपाहियों के साथ अपनी जीप गाड़ी में बैठा और बनिये को भी ले कर डाकुओं को गिरफ्तार करने चल पड़ा। इधर चौथे बनिये ने नाचना-गाना जारी रखा था :

मैं हूं बड़ा सिकंदर
डर गया एक चूहे से तो बन गया चुकंदर
मैं हूं बड़ा सिकंदर

तभी दूर से आ रही जीप-गाड़ी की हल्की-हल्की आवाज सुनाई दी। बनिये समझ गए कि पुलिसिए आ रहे हैं। लेकिन डाकू चौंक गए। यह देख बाकी उन्नीस बनिये एक साथ नाचने, गाने और गाड़ी की आवाज निकालने लगे :

मैं हूं मोटर-गाड़ी वाला
गाड़ी हो गई पंकचर, मेरा निकल गया दीवाला
मैं हूं मोटर-गाड़ी वाला

डाकुओं ने सोचा...यह तो नाटक चल रहा है, इसीलिए गाड़ी की आवाजें आ रही हैं। वे बैठे रहे और नौटंकी का मजा लेते रहे। तभी जीपगाड़ी दिखाई दी। थानेदार और पुलिस वाले दिखाई दिए। डाकू कुछ समझें, इससे पहले जीप-गाड़ी में बैठे बनिये ने गाना शुरू कर दिया :

मैं हूं तगड़ा थानेदार
कल हो गया डिसमिस, आज रोता हूं जार-जार
मैं हूं तगड़ा थानेदार



डाकुओं ने कहा, 'यह तो वही बनिया है, दूसरे बनियों को वर्दी पहना कर लाया है। जीप-गाड़ी ठीक वहीं आ कर रुकी और असली थानेदार के साथ पुलिस वाले भी डाकुओं पर टूट पड़े। मिनटों में सभी गिरफ्तार हो गए। उनके हाथों में हथकड़ियां पड़ गईं। बनियों को अपने बटवे और जेवर वापस मिल गए। वे बस में बैठ तीर्थ यात्रा के लिए आगे बढ़ गए और डाकू चले जेल की ओर।



कान का पक्का

एक थी मेंढ़की। उसने एक मेंढ़क से ब्याह किया। एक रोज मेंढ़की सौदा खरीदने बाजार चली। रास्ते में उसे एक हाथी मिला। नई-नवेली दुल्हन बनी मेंढ़की को अपने रूप का गर्व था। उसने हाथी से कहा :

खंबे जैसे पांव हैं तेरे,
बहकी-बहकी चाल
चल संभल कर पर्वत काले,
मेरे गोरे-गोरे गाल

मेंढ़की की शेखी से हाथी को गुस्सा आ गया। उसने एक पांव पछाड़ा, फिर दूसरा पांव पछाड़ा और मुंहतोड़ जवाब दिया :

काली और कलूटी है तू
पिद्दी-सा है तेरा पेट
निपटा कर तू अपना काम
घर में जाकर लेट

हाथी ने मेंढ़की को काली कलूटी कहा, इसलिए वह बड़ी दुखी हुई और सीधे घर जा कर अपने पति मेंढ़क से तिलमिला कर कहा :

चैन से गद्दे पर लेटे हैं
पति हैं आप या पापड़

हाथी कहता मुझे कलूटी
जाके लगाओ झापड़

मेंढ़क ने सोचा, कोई कच्चे कान वाला पति ही मूर्ख बीवी की बातों में आ कर बाहें चढ़ा सकता है, हाथापाई कर सकता है। मैं तो पक्के कान वाला हूं। फिर भी रूठी हुई बीवी को मनाने के लिए कुछ कहना जरूरी था। वह बोला :

चांद-सा है ये मुखड़ा तेरा
लाल सेब से गाल
हाथी होगा आंख का अंधा
उसके नाम पे मिट्टी डाल

यह सुन कर मेंढ़की मुस्करा दी।





कहानी किस्मत की

एक थी जूं देवी। वह ब्याह करना चाहती थी। कोई रिश्ता नहीं आया, तो बन-ठन कर वह खुद ही साथी की तलाश में निकल पड़ी। रास्ते में उसे एक कौआ मिला। कौए ने पूछा :

लटक-मटक तुम कहां चली हो
नील गगन की परी

जूं देवी ने कहा, 'ब्याह करने।' यह सुन कौआ बोला, 'तब मुझसे ही ब्याह कर लो।' जूं देवी ने पूछा, 'खाऊंगी क्या? पीयूंगी क्या? पहनूंगी क्या? ओढ़ूंगी क्या?' कौए ने कहा :

खाना करकट पीना पानी
बाकी सब कुछ भूलो रानी

जूं देवी बोली, 'ना बाबा ना, मुझे कूड़ा-करकट नहीं खाना। मुझे तुमसे ब्याह भी नहीं करना।' ऐसा कह कर वह वहां से आगे बढ़ी। कुछ दूर जाने पर उसे एक कुत्ता मिला। कुत्ते ने पूछा :

लटक-मटक तुम कहां चली हो
मेरी स्वर्ग परी

जूं देवी ने कहा, 'ब्याह करने।' यह सुन कुत्ता तपाक से बोला, 'तब

मुझसे ही ब्याह कर लो।' जूं देवी ने पूछा, 'खाऊंगी क्या? पीयूंगी क्या? पहनूंगी क्या? ओढूंगी क्या?' कुत्ते ने जवाब दिया :

खाना हड्डी पीना पानी
बाकी सब कुछ भूलो रानी

जूं देवी बोली, 'लेकिन यह कैसे भूलूं कि तुम्हें रात भर भौं-भौं करने की आदत है? ना बाबा, मुझे तुमसे ब्याह नहीं करना।' यह कह कर वह आगे बढ़ी। कुछ दूर जाने पर उसे एक मोर मिला। मोर ने पूछा :

लटक-मटक तुम कहां चली हो
मेरी स्वप्न परी



जूं देवी ने कहा, 'ब्याह करने।' यह सुन मोर बोला, 'तब मुझसे ही ब्याह कर लो।' जूं देवी ने पूछा, 'खाऊंगी क्या? पीयूंगी क्या? पहनूंगी क्या? ओढूंगी क्या?' मोर ने कहा :

खाना मोती पीना पानी
बाकी सब कुछ भूलो रानी

जूं देवी बोली, 'कैसे भूलूं? तुमने पंख ओढ़ रखे हैं। मेरा क्या? न बाबा, मुझे तुमसे ब्याह नहीं करना। वह आगे बढ़ी। कुछ दूर जाने पर उसे एक भैंसे ने पूछा :



लटक-मटक तुम कहां चली हो
सागर की जल परी

जूं देवी ने कहा, 'ब्याह करने।' यह सुन भैंसा बोला, 'तब मुझसे ही ब्याह कर लो।' जूं देवी ने पूछा, 'खाऊंगी क्या? पीयूंगी क्या? पहनूंगी क्या? ओढूंगी क्या?' भैंसा बोला :

खाना घास पीना तुम पानी
बाकी सब कुछ भूलो रानी

जूं देवी बोली, 'ना बाबा ना। घास तुम ही खाओ। मुझे तुमसे ब्याह नहीं करना है।' फिर जूं देवी वहां से आगे बढ़ी। थोड़ी दूर जाने पर उसे एक बिल्ला मिला। बिल्ले ने पूछा :

लटक-मटक तुम कहां चली हो
मेरी दुलारी परी

जूं देवी ने कहा, 'ब्याह करने।' यह सुन बिल्ला बोला, 'तब मुझसे ही

ब्याह कर लो।' जूं देवी ने पूछा, 'खाऊंगी क्या? पीयूंगी क्या? पहनूंगी क्या? ओढ़ूंगी क्या?' बिल्ले ने कहा :

खाना मछली पीना पानी
बाकी सब कुछ भूलो रानी

जूं देवी बोली, 'ना बाबा ना। मैं तो मछली नहीं खाती, अब मैं तुमसे ब्याह कैसे करूं?' वह वहां से आगे बढ़ी। कुछ दूर जाने पर उसे एक चूहा मिला। चूहे ने पूछा :

लटक-मटक तुम कहां चली हो
आसमान की गोरी परी



जूं देवी ने कहा, 'ब्याह करने।' यह सुन चूहे ने कहा, 'तब मुझसे ही ब्याह कर लो।' जूं देवी ने पूछा, 'खाऊंगी क्या? पीयूंगी क्या? पहनूंगी क्या? ओढ़ूंगी क्या?' चूहे ने कहा :

खाना पनीर और पीना पानी
दूंगा साड़ी रजाई रानी

यह सुन कर जूं देवी प्रसन्न हो गई। तुरंत उसने वरमाला चूहे के गले में डाल दी। चूहे ने एक पेड़ के कोटर में घर बनाया और जूं देवी के साथ रहने लगा। वह रोजाना गांव में जाता और अपनी दुल्हन के लिए बढ़िया चीजें खाने को ले



आता। जूं देवी मन-ही-मन कहती–चूहे जैसा पति तो किस्मत से ही मिलता है। मैं किस्मत वाली हूं।

टीवी पर इश्तहार देख कर एक रोज चूहा पिज्जा खरीदने के लिए शहर में पहुंचा। वह सड़क पार करके एक दुकान की ओर बढ़ ही रहा था कि गाड़ी के पहिए के नीचे आ गया। वहीं उसकी मौत हो गई। जब जूं देवी को पता चला तो वह छाती कूट कर रोने लगी। रोते-बिलखते हुए कहने लगी :

कौए पर नहीं कुत्ते पर नहीं
मोती चुगते मोर पर नहीं
भैंसे पर नहीं बिल्ली पर नहीं
हाय रे किस्मत चूहे पर रीझी



पन्नी तूने काट दी सबकी कन्नी

रामपुर नाम का एक छोटा-सा गांव था। उसमें सात-आठ घर ठाकुरों के थे। खेती-बाड़ी से जो कुछ पैदावार होती, वे आपस में बांट कर हंसी-खुशी जीवन जी रहे थे। उसी गांव में एक घर पन्नी दुसाध का था। इस पन्नी की कभी किसी से पटती नहीं थीं। वह था मुंहफट। कोई उससे कुछ कहने की जुर्रत करता तो वह ऐसा मुंहतोड़ जवाब देता कि सामने वाले की बोलती ही बंद हो जाती।

ठाकुरों के पास भैंसें काफी थीं। पन्नी के पास सिर्फ एक भैंसा था, लेकिन था बड़े डीलडौल वाला। भैंसे के गले में एक घंटी बंधी थी। जब भैंसा चलता तो घंटी टन-टन-टनटन बजती रहती। रोज सवेरे ठाकुरों की भैंसें चरने को निकलतीं, तो उनके पीछे-पीछे पन्नी भी अपने भैंसे को ले कर निकल पड़ता :

टनटन टननन बजती घंटी
ढोर-डंगर चरने जाते हैं
कोई हमारा भी ठस्सा देखे
किस शान से यारों हम आते हैं

गांव के लोग सोचते, ये सारी भैंसें पन्नी दुसाध की होंगी, वरना वह थोड़े ही कहता :

टनटन टननन बजती है घंटी
ढोर-डंगर चरने जाते हैं
कोई हमारा भी ठस्सा देखे
किस शान से यारों हम आते हैं

जब ठाकुर को इस बात का पता चला तो वे भड़क उठे। कहने लगे, 'इस खटमल की मजाल तो देखो। जैसे हमारी भैंसों का मालिक हो, ऐसे धौंस जमा रहा है। उसे सबक सिखाना पड़ेगा।'

मौका पा कर ठाकुरों ने पन्नी के भैंसे को मार डाला। फिर मूंछ मरोड़ते हुए व्यंग्य में कहा, 'अब देखना है, वह चूहे को ले कर हमारी भैंसों के पीछे चलता है या बिल्ली को ले कर।' पन्नी दुसाध भी कुछ कम नहीं था, बल्कि नहले पर दहला था। उसने शपथ ली—पट्ठों को ऐसा सबक सिखाऊंगा कि मुंह काला हो जाए।

दूसरे रोज पन्नी ने चमार से मृत भैंसे की पूरी खाल उतरवा कर सिर पर रखी और जंगल की ओर चल पड़ा। वहां बरगद का एक पेड़ था। लोग उसे 'चोर बरगद' कहते थे। चोर जब भी कहीं सेंध लगा कर आते, इसी पेड़-तले बैठ कर चोरी के माल का बंटवारा करते। पन्नी दुसाध चमड़े के साथ उसी बरगद पर चढ़ कर बैठ गया। रात के ठीक दो बजे चार चोर वहां पहुंचे। वे किसी मंत्री की हवेली लूट कर आए थे और चोरी के माल के चार हिस्से



करना चाहते थे। एक चोर ने कहा, ‘कान खोल कर सुन लो। बंटवारे में जो कोई बेईमानी करेगा, उस पर आसमान टूट पड़ेगा।’

बंटवारा करते समय एक चोर ने चालाकी की। उसने थोड़े सिक्के अपने पीछे छिपा लिए। पन्नी ने यह देख लिया। उसने ऊपर से भैंसे का बड़ा भारी चमड़ा फेंका। चोर घबड़ा कर बोले, ‘भागो, सचमुच आसमान टूटा है।’ मारे डर के वे ऐसे भागे कि पलट कर पीछे देखा तक नहीं। चंद मिनटों बाद पन्नी नीचे उतरा और सारा माल समेट कर अपने घर पहुंचा। तुरंत भीतर से कुंडी लगा कर वह रुपए गिनने बैठा। सोने-चांदी के सिक्कों की खनक सुन कर पास-पड़ोस के लोग कानाफूसी करने लगे। इस फटीचर के पास तो जहर खाने को पैसे नहीं थे। इतने सारे रुपए कहां से आए?

अगले रोज पन्नी ने बताया, ‘मैंने अपने भैंसे का चमड़ा बेच दिया। उसी के ये दाम मिले हैं। अब क्या बताऊं, शहर में चमड़े की कितनी मांग है! मेरा तो एक भैंसा था, सो मुश्किल से दस हजार मिले। अगर दस भैंसे होते तो एक लाख कमाता और सौ होते तो...,

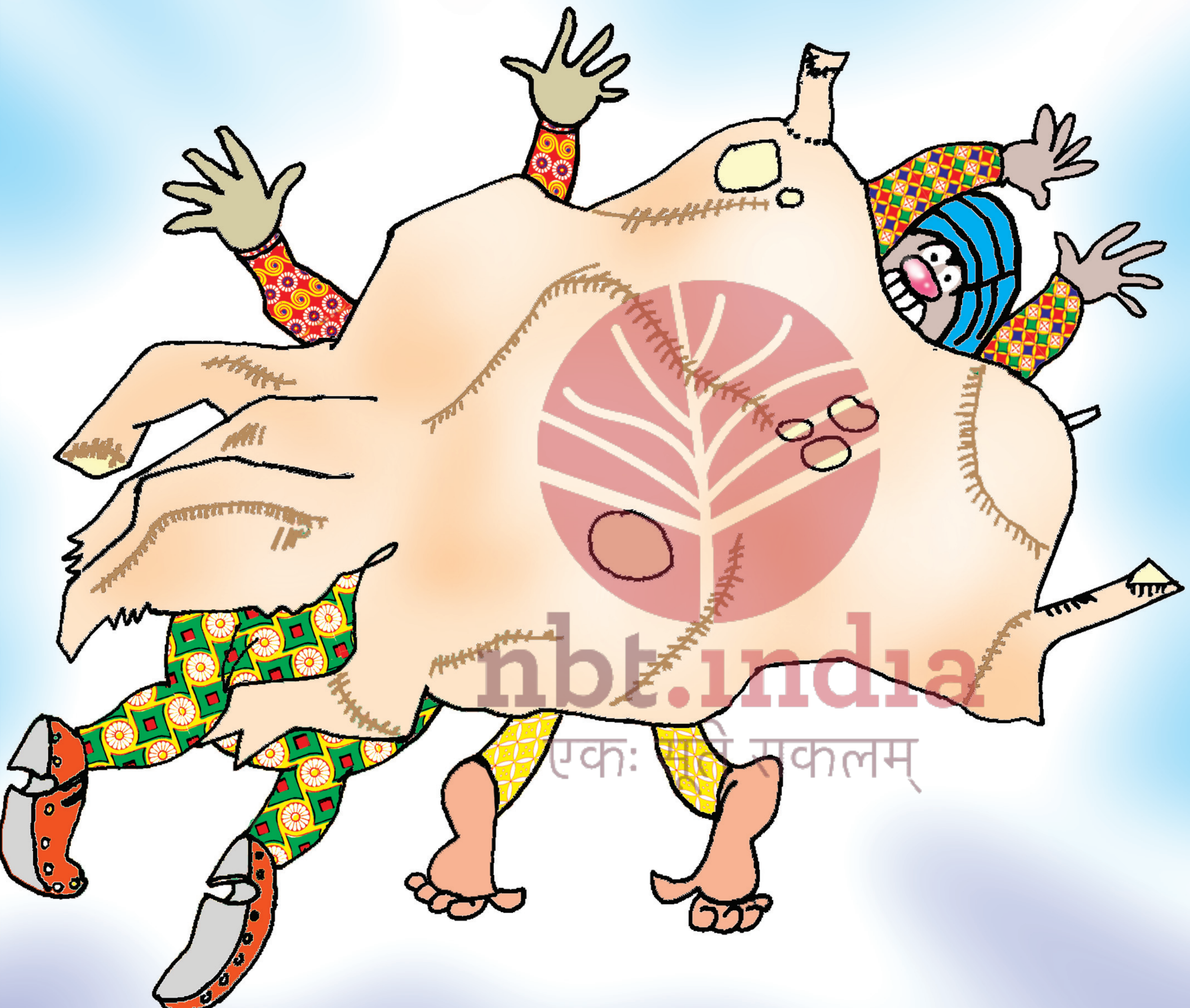
ठाकुरों की आंखें चौड़ी हो गईं। उन्होंने सोचा, क्यों न हम भी पन्नी की तरह हजारों रुपए बनाएं! बल्कि लाखों। उसके पास सिर्फ एक भैंसा था, हमारे पास तो सौ भैंसे हैं। उन्होंने तुरंत अपनी सब भैंसे जिबह कर डालीं। फौरन खालें उतरवाईं। खालों की सफाई करवाई और खटारे में भर कर मंडी पहुंचे। लेकिन इतनी सारी खालें कौन खरीदता? मुश्किल से चार-छह खालें बिकीं और सिर्फ पांच सौ रुपए मिले। लाखों कमाने के सपने गुड़-गोबर हो गए। सच्चाई सामने आ गई। वे तिलमिला उठे। एक ठाकुर चिल्ला उठा, ‘उस खटमल ने हमसे पंगा लिया है। हम सबको ठगा है। उसके होश ठिकाने लाने होंगे।’

रात में पन्नी दुसाध का झोंपड़ा धू-धू करता हुआ जल उठा। तभी उसने भी सौंगध ली, 'मेरा तो सिर्फ झोंपड़ा जला है, लेकिन उन ठाकुरों की मैं हवेलियां न जलवा दूं तो मेरा नाम पन्नी दुसाध नहीं।' उसने झोंपड़ी का राख एक थैले में इकट्ठी की। एक मोटे-ताजे गधे पर राख का बोर लादा और तीर्थयात्रियों के एक जत्थे के साथ चल दिया। उस जत्थे में एक बुढ़िया भी थी। बेचारी चल नहीं पा रही थी। उसके कंधे पर जो गठरी थी, उसमें काफी जेवर और अशरफियां थीं। पन्नी से उसने प्रार्थना की, 'बेटा, अपने इस गधे पर मुझे बैठने दोगे?' पन्नी बोला, 'जरूर, लेकिन इस बोरे में मेरी जिंदगी भर की कमाई है। अगर गधे पर बैठे-बैठे आपने किसी भी इंसान का बुरा सोचा तो मेरा सारा धन राख हो जाएगा। आप वादा करें तो मैं आपको बैठने दूं।' बुढ़िया ने कहा, 'भला मैं किसी का बुरा क्यों सोचूंगी? मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है।'

वे आगे बढ़े। चलते-चलते अयोध्या आ पहुंचे। बुढ़िया गधे पर से उतरी तो पन्नी ने कहा, 'मांजी, जरा ठहरिए। मुझे अपना धन देख लेने दीजिए।' मगर थैले में तो सिर्फ राख थी, सो खोलने पर राख ही निकली। पन्नी बोला, 'मांजी, मेरा सारा धन राख हो गया। सच-सच बताना, आपने किसके बारे में बुरा सोचा था?' बुढ़िया नेक थी। उसने सच-सच कह दिया, 'हां बेटा, मैंने अपनी बहू के बारे में भला-बुरा सोचा था।' पन्नी तपाक से बोला, 'तब तो आपको अपना सारा धन मुझे देना होगा।' बुढ़िया ने लाचार हो कर अपनी गठरी उसे दे दी। पन्नी दुसाध धन ले कर घर लौटा और किवाड़ बंद करके अशरफियां गिनने लगा। सारी रात गिनता रहा। सवेरे पड़ोसियों ने पूछा, 'ओ फटीचर, इतनी सारी अशरफियां तू लाया कहां से?' पन्नी ने कहा, 'मेरे झोंपड़े की जो राख थी न, वह मैंने बेच दी। उसी की

कमाई है। मेरी कोई हवेली तो थी नहीं, जो दस लाख रुपए मिलते। फिर भी लाख रुपयों की ये अशरफियां कम नहीं हैं।'

लालची ठाकुरों की आंखें फिर एक बार चौड़ी हो गईं। उनमें से एक ने कहा, 'पन्नी लखपति बन सकता है, तो भला हम सब क्यों न बनें!' उसी क्षण ठाकुरों ने अपनी-अपनी हवेलियों पर मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा दी। देखते ही देखते हवेलियां जल कर राख हो गईं। अब ठाकुर राख के पीपे भर कर शहर में बेचने चले गए। रास्ते में वे आवाज भी लगाते जा



रहे थे, 'ले लो राख ले लो। एक पीपे के सिर्फ एक लाख रुपए।' यह सुन कर राह चलते लोग ठठा कर हंसने लगे। ऐसे पागल उन्होंने आज से पहले कभी नहीं देखे थे। एक बनिये ने तो उनके मुंह पर कहा, 'यही राख अपनी देह पर मल कर गंगा में डूब मरो।' सातों ठाकुर मुंह लटकाए वापस गांव आए। उनमें से एक ने समझदारी की बात कही, 'यह हमारे लालच का नतीजा है। इस बार न सिर्फ हमारी नाक कटी है, बल्कि हमारे मुंह भी काले हुए हैं।'

अब वे पन्नी दुसाध का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते थे क्योंकि वे बेघर हो गए थे, जबकि पन्नी ने अपने लिए एक कोठी बनवा ली थी। बहुत सारी भैंसों के साथ उसने एक भैंसा भी खरीद लिया था :

टनटन टननन बजती घंटी
ढोर-डंगर चरने जाते हैं
कोई हमारा भी ठस्सा देखे
किस शान से यारों हम आते हैं

आज भी गांव में पन्नी दुसाध की आवाज गूंजती है।





बेदम बेदुमा

एक था नाई। वह किसी लालबुझक्कड़ से कम नहीं था। एक रोज वह मेले में जाने के लिए निकला। रास्ते में घना जंगल था। नाई अपनी मस्ती से चला जा रहा था कि सामने से एक बेदुमा बाघ आता दिखाई पड़ा। नाई डर गया। उसने सोचा, यह तो साक्षात यमदूत है। मुझे कच्चा चबा जाएगा।

तभी नाई को एक तरकीब सूझी। जैसे ही बेदुमा बाघ सामने आया, वह गरज कर बोला, 'आ जा कुत्ते। तेरी यह मजाल कि तू मेरा रास्ता रोके? एक बाघ को मैंने कैद कर लिया। अब तेरी बारी है।' नाई ने बाघ को कुत्ता कहा, इसलिए बाघ भड़क कर लपका। उसी क्षण नाई ने आईना निकाल कर बेदुमे बाघ के सामने कर दिया। बेदुमे ने आईने में अपना मुंह देखा। उसने सोचा, यह नाई तो रुस्तमे-जहान लगता है। एक बाघ को उसने सचमुच कैद कर लिया है। अब दूसरी बारी मेरी है...वह ऐसा डर गया कि वहां से दुम दबाए बिना ही भाग निकला, क्योंकि वह बेदुमा था।

आईना हजामत बनाने की पेटी में रख कर नाई आगे बढ़ा। चलते-चलते रात हो गई। वह एक घने पेड़ पर चढ़ कर बैठ गया। थोड़ी देर बाद वहां बाघ आने लगे। मिनटों में बाघों की बारात इकट्ठा हो गई। आज वहां बारातियों के लिए समूह भोजन का इंतज़ाम था।

इस भीड़ में वह बेदुमा भी था। भोजन चल रहा था। इधर-उधर की बातें हो रही थीं। इसी बीच बेदुमा बुदबुदाया, 'आज तो गजब हो गया।

रास्ते में मुझे एक नाई मिला था। जब मैंने उस पर छलांग लगाई तो वह चिल्लाया...आ जा कुत्ते। एक बाघ को मैंन कैद किया है, अब तेरी बारी। यह कहते हुए उसने अपनी पेटी में से एक बाघ निकाल कर मुझे दिखाया।



मैं तो ऐसा डरा कि वहां से तुरंत चंपत हो गया।' दूसरा बाघ बोला, 'उल्लू! नाई की पेटी इत्ती-सी होती है। उसमें इतना बड़ा बाघ कैसे समा सकता है?' बेदुमे ने कहा, 'लेकिन मैंने अपनी सगी आंखों से देखा था।' तीसरा बाघ बोला, 'काठ के उल्लू! तू तो जनम का डरपोक है। तेरी जगह मैं होता तो उसका वहीं कोरमा बना कर खा जाता।'

बाघों की बात सुन कर नाई को पसीना छूट गया। वह ऐसे कांपने लगा कि पेड़ की डालियां हिलने लगीं। पास की डाली पर एक बंदर सो रहा था। डालें हिलीं तो वह नीचे जा गिरा। तभी नाई ने अवसर का लाभ उठाते हुए बुलंद आवाज में कहा, 'पकड़ ले उस बाघ को। बड़ा सयाना बनता है। खबरदार जो छोड़ा।' यह सुन कर बेदुमा तुरंत बोला, 'मैंने नहीं कहा था? कोई बाघों को पकड़ने निकला है।' बंदर उसी पर जा गिरा। वह पलट कर बिना देखे ही भाग निकला। उसके पीछे बाकी बाघ भी भागे। थोड़ी देर में मैदान साफ हो गया। सुबह होने पर नाई इत्मीनान से नीचे उतरा और मेले में पहुंच गया।





बड़ा मन बहना का

एक था भाई और एक थी बहना। इन दोनों बच्चों को रोते-बिलखते छोड़ कर मां-बाप चल बसे थे। घर में एक वक्त की रोटी भी नहीं थी। इसलिए भाई-बहन रोजी की तलाश में निकल पड़े। चलते-चलते रास्ते में एक नगर आया। नगर के सिवान पर एक बगीचा था। शाम हो चुकी थी। भाई-बहन दोनों रात भर के लिए वहीं रुक गए। देर रात गए बहन को जोरों की भूख लगी। वह रोने लगी। भाई ने खड़े होते हुए कहा, 'मत रो बहना। मैं नगर में जा कर तुम्हारे लिए अभी कुछ खाने को ले आता हूं।' लेकिन नगर में दाखिल होने का सदर दरवाजा कब का बंद हो चुका था। वह बाहर बैठ गया।

इस नगर का राजा रात में मर गया था। राजा की अपनी कोई संतान नहीं थी। इसलिए मंत्रियों के आगे सवाल खड़ा हुआ कि सिंहासन पर अब किसे बैठाया जाए? सब मंत्रियों ने आपस में सलाह की और यह तय किया कि सवेरे सदर दरवाजा खुलते ही जो सबसे पहले नगर में दाखिल हो, उसी को ताज पहनाया जाए।

भोर हुई। सब सदर दरवाजा खोलने चले। जैसे ही दरवाजा खुला, वह भाई उनको दिखाई दिया। सब उसे आदर के साथ महल में ले आए और सिंहासन पर बिठाया, उसके माथे पर ताज पहनाया। अचानक राज्य मिल जाने से भाई इतना खुश हुआ कि अपनी बहन को ही भूल गया। उधर

बगीचे में बैठी बहन भाई की बाट जोहती रही। सूरज सिर पर आ गया लेकिन भाई नहीं लौटा। भूख का दुख भूल कर अब वह भैया-भैया पुकार कर रोने लगी। थोड़ी देर बाद वहां एक मालिन आई। जब उसे सारी बात पता चला तो वह बोली, 'जाने तुम्हारा भाई कहां खो गया है! तुम मेरे साथ चलो। मेरी कोई औलाद नहीं है। तुम मेरी बेटी बन कर रहना।'

बहन रोती हुई मालिन की कुटिया में गई और उसकी बेटी बन कर रहने लगी। साथ ही उसने भाई की खोज भी शुरू कर दी। एक रोज उसे पता चला कि उसका भाई तो राजा बन कर ऐश कर रहा है। वह खामोश रही, क्योंकि राजा तक पहुंचना मुश्किल था।,

एक रोज राजा हाथी पर बैठ कर घूमने निकला। रास्ते में उसने मालिन की मुंहबोली बेटी को देखा। वह अब बड़ी हो चुकी थी। इसलिए मालिन को महल में बुलवा कर पूछा, 'क्या तुम अपनी बेटी का ब्याह हमसे करना



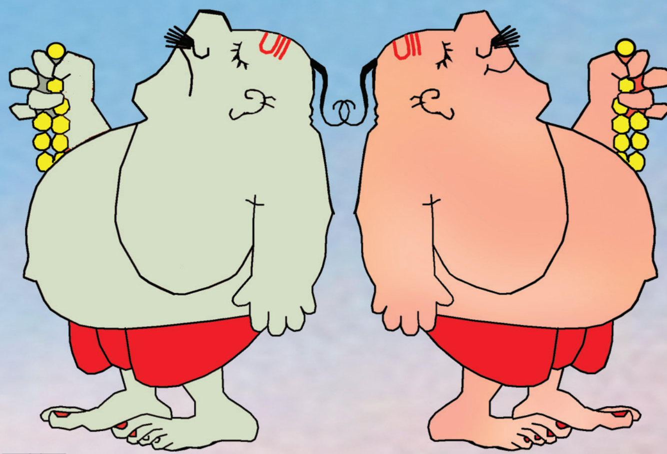
पसंद करोगी?' मालिन ने गद-गद होते हुए कहा, 'महाराज, आप जैसा दामाद पाना मेरे लिए बड़े भाग्य की बात होगी।' मालिन की बेटी जानती थी कि राजा उसका अपना सगा भाई है। उसने ब्याह करने से इंकार कर दिया। लेकिन मालिन ने उस बेचारी की बात नहीं मानी। बोली, 'तुम्हारी तो अकल मारी गई है। राजा से ब्याह करके तुम रानी बनोगी। यह ब्याह जरूर होगा।' ब्याह का शुभ दिन तय हुआ। मालिन ने बेटी को विवाह मंडप में बिठाया। जब राजा उसकी बगल में बैठने लगा तो वह बोली :

मंडप में न बैठो ओ मेरे भैया
एक ही मां की संतान हैं हम भैया
हम ठहरे थे बगीचे में थके-हारे
तुम गए थे मेरी भूख मिटाने भैया

राजा कुछ समझा नहीं। वह फिर से अपने आसन पर बैठने लगा। बहन ने फिर याद दिलाया :

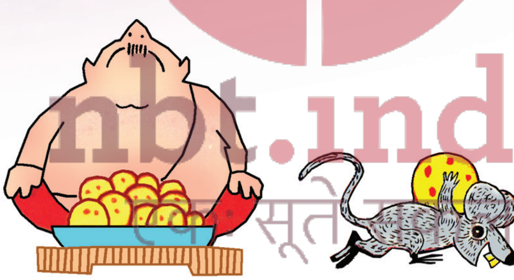
मंडप में न बैठो ओ मेरे भैया
एक ही मां की संतान हैं हम भैया
हम ठहरे थे बगीचे में थके-हारे
तुम गए थे मेरी भूख मिटाने भैया

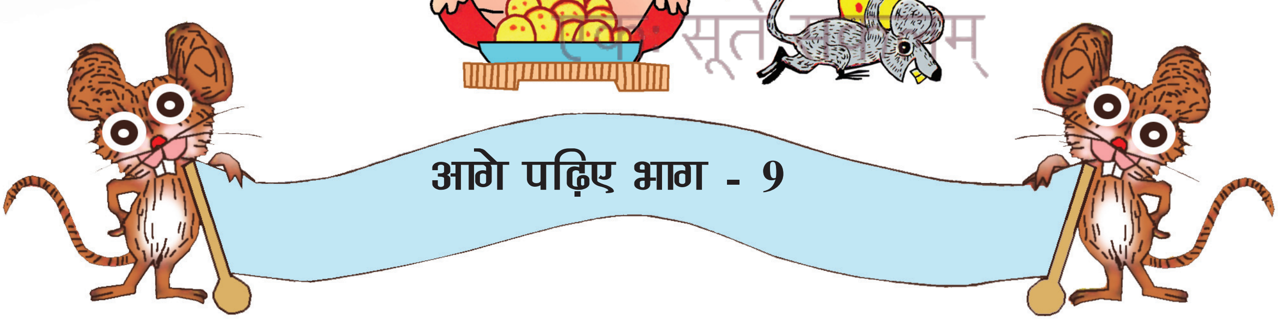
राजा खड़ा-खड़ा सोचने लगा। ऐसे शुभ अवसर पर यह लड़की अंट-संट क्यों बक रही है? उसने दुल्हन को गौर से देखा और पहचान लिया। वह शर्मिंदा हो गया। उसने वहीं बहन से क्षमा मांगी। बहन ने बड़ा मन रख कर उसे माफ कर दिया। राजा अपनी बहन को बहन बना कर ही महल में ले आया। अब बहन भी अपने भैया के साथ ठाठ से रहने लगी।



बकझक

एक रात की बात, चार और तीन सात।
बेर का एक कांटा, लंबा बारह हाथ।
उसकी नोक पर बसे थे तीन गांव–
दो उजाड़ और एक में बस्ती ही नहीं ॥
उसमें रहते थे तीन चोटी चतुर–
दो अनपढ़ और एक ज्ञानी ही नहीं ॥
उसके घर थी तीन दुधारू गौएं–
दो मरियल और एक में दूध ही नहीं ॥
उसने दिए तीन सुंदर-से बछड़े–
दो अंधे और एक को आंखें ही नहीं ॥
उसने खोजे तीन हरियाले चरागाह–
दो सूखे और एक में घास ही नहीं ॥





शिक्षक भाई-बहनों से

लीजिए, ये हैं बाल-कथाएं। आप बच्चों को इन्हें सुनाइए। बच्चे इनको खुशी-खुशी और बार-बार सुनेंगे। आप इन्हें रसीले ढंग से कहिए, कहानी सुनाने के लहजे से कहिए। कहानी भी ऐसी चुनें, जो बच्चों की उम्र से मेल खाती हो। भैया मेरे, एक काम आप कभी न करना। ये कहानियां आप बच्चों को रटाना नहीं। बल्कि, पहले आप खुद अनुभव करें कि ये कहानियां जादू की छड़ी-सी हैं।

यदि आपको बच्चों के साथ प्यार का रिश्ता जोड़ना है तो उसकी नींव कहानी से डालें। यदि आपको बच्चों का प्यार पाना है तो कहानी भी एक जरिया है। पंडित बन कर कभी कहानी नहीं सुनाना। कील की तरह बोध ठोकने की कोशिश नहीं करना। कभी थोपना भी नहीं। यह तो बहती गंगा है। इसमें पहले आप डुबकी लगाएं, फिर बच्चों को भी नहलाएं।

गिजुभाई





nbt.india
एकः सूते सकलम्



ISBN 978-81-237-5196-2
पहला संस्करण : 2008
ग्यारहवीं आवृत्ति : 2017 *(शक 1939)*

Bedam Beduma *(Hindi)*

₹ 65.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
Website: www.nbtindia.gov.in



मुद्रकः गोपसंस पेपर्स लि., नोयडा